National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2026; 1(64): 23-25
© 2026 NJHSR
www.sanskritarticle.com

कल्पेश कुमार शुक्ला
सहायक आचार्य - प्रभाशंकर पण्ड्या-स्नातकोत्तर महाविद्यालय - गढ़ी, बाँसवाड़ा

प्रो. डॉ. प्रमोद कुमार वैष्णव
शोध निदेशक - परीक्षा नियंत्रक: गोविन्द गुरू जनजातीय-विश्वविद्यालय, बाँसवाड़ा

Correspondence:
कल्पेश कुमार शुक्ला
सहायक आचार्य - प्रभाशंकर पण्ड्या-स्नातकोत्तर महाविद्यालय - गढ़ी, बाँसवाड़ा

"संस्कृत साहित्य की आधुनिक काव्य विधाएः सामान्य परिचय"

कल्पेश कुमार शुक्ला , प्रो. डॉ. प्रमोद कुमार वैष्णव

प्रस्तावना :-

संस्कृत भाषा भारतीय संस्कृति दर्शन और साहित्य की मूल आधार आधारशिला रही है। प्राचीन समय में जब विश्व साहित्य में सर्वप्रथम वेदों की रचना हुई उस समय भी संस्कृत काव्य में धार्मिक, दार्शनिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विषयों को अभिव्यक्त करने का माध्यम संस्कृत भाषा रही है। प्राचीनकाल में संस्कृत साहित्य में विभिन्न विधाओं में रचना हुई जिनमें महाकाव्य, नाटक, स्मृति ग्रन्थ आदि। यह काव्य विधाएँ समय के अनुसार चलती रही परन्तु अब आधुनिक समय में अर्थात् 18वीं शताब्दी के बाद इसमें अनेक नवीन विधाओं का सृजन हुआ और नवीनतम काव्य साहित्य उत्पन्न हुआ। 20वीं शताब्दी से लेकर वर्तमान समय तक संस्कृत साहित्य में अनेको विद्वानों, कवियों और संस्कृत साहित्यकारों ने रचनात्मक साहित्य सृजन के क्षैत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

आधुनिक संस्कृत काव्य का स्वरूप :-

आधुनिक संस्कृत काव्य परम्परागत छंद और अलंकारों का पालन करते हुए भी अपने विषयों, शैली और दृष्टिकोण में नवीनता लिए हुए है। यह काव्य केवल धार्मिक या पौराणिक विषयों तक सीमित नहीं है। अभी तो इसमें सामाजिक चेतना, राष्ट्रीय प्रेम, समसामयिक समस्याएँ, स्त्री-विमर्श, पर्यावरण विज्ञान तथा मानवीय मूल्य जैसे विविध विषयों का समावेश किया गया है।

आधुनिक संस्कृत काव्य में विभिन्न विधाएँ विकासित हुई जो संस्कृत साहित्य को समृद्ध करती है। आधुनिक काल संस्कृत साहित्य में नवसृजन हेतु स्वर्णकाल है। इसी सन्दर्भ में वनमाली विश्वास का कहना है- "वस्तुतः बीसवीं शताब्दी के उत्तर भाग तथा इक्कीसवी शताब्दी के प्रर्वतमान समय को सर्जनात्मक संस्कृत साहित्य के लिए स्वर्णमय काल माना जा सकता है।"

गद्य, काव्य, महाकाव्य, नाटक, कथा, खण्डकाव्य के साथ-साथ लघुकथा, पत्रकाव्य, गजल, निबन्ध, उपन्यास, हाइकू, गीत, रेड़ियों रूपक, टुप् कथाएँ, संस्मरण आत्मकथा आदि लिखे जा रहे है। कुछ प्रमुख काव्य विधाएं इस प्रकार है।

(1) गजल :- यह मूलतः अरबी भाषा का शब्द है। काव्य विद्या के रूप में इसका सर्वप्रथम प्रयोग ईरानवासी रौदकी ने 840-940 के मध्य में किया। बाद में गजल फारसी भाषा में सम्मिलित होकर अब उर्दू साहित्य में प्रसिद्ध हो गया। गजल में प्रेम, विरह, दर्शन, जीवन-संघर्ष, सामाजिक यथार्थ तथा आध्यात्मिक अनुभूतियों की अभिव्यक्ति होती है। परम्परागत गजल में मतला, मकता, काफिया, रदीफ और बछ जैसे तत्व होते है। संस्कृत साहित्य में गजल साहित्य सृजन में महामहोपाध्याय भट्ट मथुरानाथ शास्त्री का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। भट्ट मथुरानाथ शास्त्री ने "साहित्य वैभवम" तथा "गतिविधि" नामक काव्य संग्रह में गजल की गीतियां 1930 में मुंबई के निर्णय सागर प्रेस से प्रकाशित हुई।

उदाहरण –

"न हि स्थिरं मानुषजीवितं क्वचित।
क्षणेन हासः क्षणतः विषादः।।
यद् यद् द्यूतं तद् विलयं प्रयाति।
चिन्तैव शेषा हृदये नरस्य।।"

-"भट्ट मथुरानाथ शास्त्री" गजल की गतियाँ

(2) कव्वाली :-

यह एक प्रकार का सुफही संगीत शैली है जो प्रेम एवं भक्ति गीतों पर आधारित है। यह मुख्यतयाः फारसी, हिन्दी उर्दू तथा अन्य भाषाओं में गाई जाती है। संस्कृत में कव्वाली लिखने वाले कवि बहुत ही कम है। लेकिन यह नवीन काव्य विद्या के रूप में उभर रही है। कव्वाली सूफी परम्परा से जुड़ी हुई काव्य गायन शैली है जबकि संस्कृत साहित्य में वैदिक, शास्त्रीय या धार्मिक ग्रन्थ है। इसलिए संस्कृत के जो भक्तिगीत है उसे कव्वाली के रूप में गाया जा सकता है।

जैसे -

"ललिता-लवंग-लता -
परिशीलन-मन्द - म पवन-समीरे
मद-मकरन्द-रसिक-मधुकर-निकरे
हरि-हरि-हरि-हरि-बोल"

-गीतगोविन्द-जयदेवकृत

(3) उपन्यास :-

संस्कृत साहित्य की नवीनतम काव्यविद्या उपन्यास का सर्वप्रथम प्रादुर्भाव पण्डित अंबिकादत्तव्यास विरचित शिवराजविजयम् से हुआ। स्वतंत्रता के पश्चात् भी विभिनन उपन्यासों की रचना हुई जिसमें प्रमुख इस प्रकार है।

1. गोविन्ददानम् - पण्डित जगन्नाथ पाठक
2. विद्युतप्रभा - राधावल्लभ त्रिपाठी
3. द्वासपुर्णा - रामजी उपाध्याय
4. कुमुदिनीचन्द्र - मेघावृतशास्त्री
5. आदर्शरमणी - अट्ट मधुरानाथ शास्त्री

(4) लघुकथा -

जितना वैदिक साहित्य प्राचीन है उतना ही संस्कृत लघु कथा साहित्य का इतिहास है। स्वतंत्रता के पश्चात् देश के अनेकों विश्वविद्यालयों में लघुकथाओं का अध्ययन तथा लेखनकार्य का पुनः प्रारम्भ हुआ।

कुछ लघुकथाकार तथा उनके रचना संग्रह

1. डॉ. रामकरण शर्मा - सड्कटयात्रा, प्रतिबिम्ब
2. डॉ. वाचस्पति उपाध्याय - सक्डटेधर्मः, मूकनाटकः
3. डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी - 'समकालीन संस्कृत, लघुकथा, अनुभव

(5) संस्कृत जीवनी -

आधुनिक समय में कई महत्त्वपूर्ण संस्कृत जीवनी ग्रन्थ लिखे गए है जो विभिन्न व्यक्तियों के जीवनकाव्य और उपलब्धियों पर प्रकाश डालते है। जीवन चरितकारों में कलानाथशास्त्री का नाम सर्वप्रमुख है। उनके द्वारा रचित ग्रन्थ "विद्वज्जन चरितामृतं" है। इसके अतिरिक्त महामहोपाध्याय नारायणशास्त्री ख़िस्ते श्रीधर भास्कर वर्णेकर, हरिनारायण दीक्षित, आचार्य रेवाप्रसाद दीक्षित आदि प्रमुख है।

(6) यात्रावृतान्त :-

यात्रावृतान्त आत्मकथात्मक शैली में लिखित एक आधुनिक विधा है। संस्कृत साहित्य में भी इसका प्रयोग हुआ है। यात्रा वृतान्त में लेखक अपनी किसी यात्रा का वर्णन रोचक तरीके से करता है, जिससे पाठक अन्य स्थान की भौगोलिक, सांस्कृतिक, सामाजिक ऐतिहासिक विशेषताओं से परिचित होता है।

प्रमुख आधुनिक संस्कृत यात्रावृत्तान्त :-

1. डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी - अवतीर्ण गंगा
2. डॉ. आचार्य पण्डित नरेन्द्र - कैलासस्य यात्रायाः वृत्तान्त
3. डॉ. गोपीनाथ कविराज - काशी, गया, प्रयाग की यात्रा
4. डॉ. उमाशंकर अवस्थी - "उत्तरायणे"।

(7) व्यंग्यकाव्य :-

यह सामाजिक कुरीतियों, राजनीतिक विसंगतियों और अन्य विरोधाभासों पर लिखा हुआ हास्य और आलोचनात्मक काव्य होता है। इसमें, हास्य, विडम्बना, कटाक्ष और प्रतीक के माध्यम से आधुनिक समाज की विसंगतियों- शिक्षा, राजनीति, प्रशासन, पाखण्ड पर तीखा प्रहार किया गया है।

1. भट्ट मथुरानाथ शास्त्री का विनोद वाटिका
2. बलराम शुक्ल का लघुसन्देश और परिवाह
3. रंगीलादास का - व्यंग्यात्मक कांग्रेस गीता

(8) रागकाव्य :-

रागकाव्य संस्कृत साहित्य की एक काव्य विद्या है, जिसमें संगीत और काव्य का मिलन है। यह शैली श्रोताओं के मन में गहरे भाव उत्पन्न करती है। इसमें संगीत के अनुसार छंदों का प्रयोग होता है।

रागकाव्य में महाकवि जयदेव विरचित "गीत गोविन्द" प्रमुख है। आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी द्वारा विरचित "गीत धीवरम्" एक नवीन परम्परागत रागकाव्य है।

(9) मुक्तक काव्य :-

मुक्तक काव्य जैसा नाम से स्पष्ट है "मुक्त" अर्थात् जो अपने आप में स्वतंत्र है। यह किसी काव्य, कथा से बंधा हुआ न हो। मुक्तक को स्वयंपूर्ण काव्य कहा जाता है।

"एकस्मिनैव श्लोके यत्र पूर्णोऽर्थोऽभिव्यज्यते स मुक्तकम्।"

- आचार्य मम्मट

जैसे -

"न मौनं दुर्बलस्यास्ति न च वाचः पराक्रमः।
समयो वक्तुमर्हो यः स एव हि सुधीजनः।।

"समकालीन संस्कृत काव्य संग्रह - राधावल्लभ त्रिपाठी"

(10) रेडियों रूपक :-

संस्कृत नाट्यशास्त्रीय ग्रन्थों में रूपकों की संख्या 10 तथा उपरूपकों की संख्या 18 बताई गई है। 20वीं शताब्दी में रेडियों के आविष्कार के बाद एक अन्य रूपक जो ध्वनि रूप के रूप में रेड़ियों पर प्रसारित होने लगा जिसे रेडियों रूपक कहा जाने लगा।

भारत में 1936 में ऑल इण्डिया रेडियों की विधिवत स्थापना हुई किन्तु रेडियों रूपक का 1956 में विकास हुआ। इस आकाशवाणी द्वारा प्रसारित होने वाले काव्य को रेडियों, रूपक, ध्वनिनाटक, ध्वनिरूप, नभोवाणीरूपक, श्रव्य नाट्य तथा अंग्रेजी में Radio feature या Radio Drama कहा गया है। वर्तमान समय में संस्कृत में रेडियों रूपक विद्या बहुत लोकप्रिय है तथा इस संस्कृत रूपक विद्या पर असंख्य रचनाए प्राप्त हुई है।

संस्कृत का प्रथम रेडियों नाटक भागीरथ प्रसाद शास्त्र "वागीश" का कृषकों की समस्याओं पर "कृषकाणां नागपाशः" था।

निष्कर्ष :-

आधुनिक संस्कृत काव्य में विविधताओं का समावेश इस बात का प्रमाण है कि यह काव्य आज भी जीवन्त, सृजनशील तथा सामाजिक रूप से प्रासंगिक है। इन विधाओं के माध्यम से न केवल पारम्परिक मूल्यों का संरक्षण होता है, अपितु नवीन विचारों और समकालीन विमर्शो का समावेश होता है।

संन्दर्भ ग्रन्थ सूचि :-

1. उपाध्याय बलेदव - संस्कृत साहित्य का 'इतिहास'-चौखम्भा विद्या भवन-वाराणसी।
2. त्रिपाठी राधावल्लभ - 'आधुनिक संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन" राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान
3. शर्मारामकरण :- "आधुनिक संस्कृत काव्यशास्त्र चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन
4. मिश्रा गोविन्द चन्द्र :- "आधुनिक संस्कृत नाटक"
5. बालकृष्णन के :- Cinema and sanskrit : A study priyamanand kerela film society
6. Joshi S.P : - Sanskrit Natya aur Navvichar-Sampurnanand Sanskrit vish vavidyalay.
7. मधुसुदन शर्मा - रेडियो रूपक : संस्कृत काव्य माध्यम की विद्या